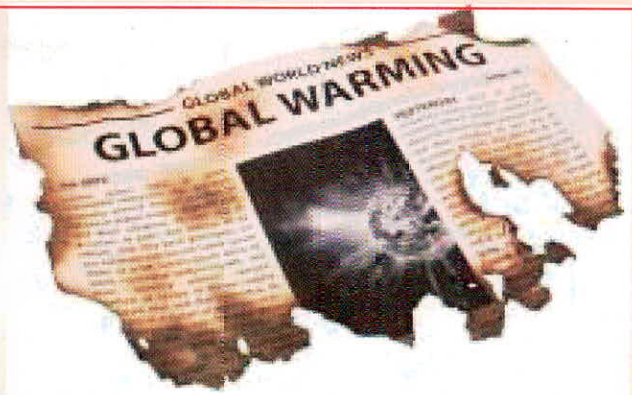

अगर कोयले से बनने वाली बिजली के बदले पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान दिया जाए तो वातावरण को गर्म करने वाली गैसों पर नियंत्रण पाया जा सकता है ।

है। इसका गठन गरीब देशों की मदद के लिए 10 अरब डॉलर जमा करना है।

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय

वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए मुख्य रूप से सी.एफ.सी. गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिए फ्रिज़, एयर कंडीशनर और दूसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या ऐसी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी. गैसें कम निकलती हों।

औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकलने वाला धुंआ हानिकारक है और इनसे निकलने वाला कार्बन डाइऑक्साइड गर्मी बढ़ाता है। इन इकाइयों में प्रदूषण रोकने के उपाय करने होंगे।

वाहनों में से निकलने वाले धुएं का प्रभाव कम करने के लिए पर्यावरण मानकों का सख्ती से पालन करना होगा।

उद्योगों और खासकर रासायनिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे को फिर से उपयोग में लाने लायक बनाने की कोशिश करनी होगी और प्राथमिकता के आधार पर पेड़ों की कटाई रोकनी होगी और जंगलों के संरक्षण पर बल देना होगा।

अक्षय ऊर्जा के उपायों पर ध्यान देना होगा। यानि अगर कोयले से बनने वाली बिजली के बदले पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान दिया जाए तो वातावरण को गर्म करने वाली गैसों पर नियंत्रण पाया जा सकता है तथा साथ ही जंगलों में आग लगने पर रोक लगानी होगी।

संपर्क करें :
डॉ. रमा मेहता, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, (रा.ज.सं.), रूड़की (उत्तराखण्ड)

अतिवृष्टि की दुश्वारियाँ

पृथ्वी के निर्माण से आज तक का इतिहास निराला है। प्राकृतिक आपदायें आना कोई नई बात नहीं है। बाढ़, सूखा, भूकम्प, चक्रवात, हिमयुग, समुद्री तूफान, भूस्खलन आदि आना प्रकृति के अपने समीकरण हैं, उसका अपना गणित है, उसका अपना नियंत्रण भी। किन्तु जो आपदायें, निजस्वार्थ के वशीभूत मनुष्य ने पैदा की हैं या प्राकृतिक आपदाओं के आने के समय को छोटा कर उनकी दर बढ़ा देती हैं, वह चिन्तनीय है और चिन्तन-मनन का विज्ञान भी, इन्हीं आपदाओं में हर वर्ष आने वाली बाढ़ एवं उसकी विभीषिका का एक कारण इस रचना द्वारा बताने का लघु प्रयास किया गया है। आशा है ज्ञानी एवं विद्वत्जन समुचित निदान का प्रयास करेंगे।

इस साल की बरसात ने चौतरफा कहर बरसाया।
पहाड़ों अरू मैदानों में, सब तरफ बर्बादी ने कहर ढाया।।
ये कुदरत की बेरूखी नहीं, इंसान की करतूतों का फल है।
अब भी संभल जा इंसान, यह बरबादी नहीं, चेतावनी का जल है।।
बाढ़ आयी-फसल डूबी, मकान ढहे-जनहानि हुई, ये तो होना ही था।
दिल्ली, यू.पी., हरियाणा व उत्तराखण्ड, सर्वत्र ताण्डव मचना ही था।।
यह आपदा चिन्तन-मनन की एक खुली किताब है।
विकास योजनायें कैसी हों? "गम्भीर विषय" से जुड़ा सवाल है।।
यमुना हो या गंगा, शारदा हो या रामगंगा, ये तो सदा नीरा है।
इनके बहाव मार्ग पर, अतिक्रमण से मिली ये पीड़ा है।।
यमुना ने दिल्लीवासियों के घरों को नहीं डुबोया है।
सच तो ये है, दिल्ली वालों ने यमुना की भूमि को कब्ज़ाया है।।
इस बार यमुना ने क्रुद्ध होकर, अपना कब्ज़ा वापस पाया है।
यही तो गंगा ने किया, शारदा ने किया, रामगंगा ने किया।।
यही सप्त सिंधु करेंगी, ब्रहमपुत्र करेगी, घाघरा व गंडक करेगी,
सभी नदी-नाले करेंगे।
अरे मानुष, जल निकासी के मार्ग को कब्ज़ाना छोड़ो।।
जंगलों का नाशकर आबादी बसाना छोड़ो।
विकास के नाम पर हिमालय को रौंदना छोड़ो।।
शहर विस्तारीकरण के नाम पर गांवों को उजाड़ना छोड़ो।
औद्योगीकरण की आड़ में जहर उगलना छोड़ो।।
अन्यथा नित मिलेंगी, कुदरती दुश्वारियाँ, उजड़ेगी बस्तियां,
पनपेंगी अनूठी बिमारियां,
प्रकृति को उसके हाल में छोड़ना, होगी अब एक बड़ी समझदारी।
निज स्वार्थ को प्रकृति दोहन, लायेगा दुश्वारियाँ ही दुश्वारियाँ।।

संपर्क करें :
श्री बी.सी.पंत, रा.इ.का. सैजना, खटीमा जिला - ऊधमसिंह नगर, पिन कोड : 262308 (उत्तराखण्ड)